बिरसा मुंडा

(जनजातीय गौरव)

संपादक

आलोक कुमार चक्रवाल

बिरसा मुंडा
(जनजातीय गौरव)

संपादक

प्रो. आलोक कुमार चक्रवाल

कुलपति, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़

सह-संपादक

प्रो. शैलेन्द्र कुमार

कुलसचिव, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़

संपादक-मंडल

प्रो. प्रवीन कुमार मिश्र
विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग
गुरु घासीदास विश्वविद्यालय,
बिलासपुर, छत्तीसगढ़

डॉ. घनश्याम दुबे
सहायक प्राध्यापक, इतिहास विभाग
गुरु घासीदास विश्वविद्यालय,
बिलासपुर, छत्तीसगढ़

डॉ. नीलकंठ पाणिग्राही
विभागाध्यक्ष
मानवशास्त्र एवं जनजातीय विकास विभाग,
गुरु घासीदास विश्वविद्यालय,
बिलासपुर, छत्तीसगढ़

डॉ. सुबल दास
सहायक प्राध्यापक
मानवशास्त्र एवं जनजातीय विकास विभाग,
गुरु घासीदास विश्वविद्यालय,
बिलासपुर, छत्तीसगढ़

किताबवाले
दिल्ली-110002

अस्वीकरण

इस पुस्तक में लिखे और व्यक्त किए गए सभी विचार लेखकों के हैं, प्रकाशक किसी भी जानकारी की मौलिकता और पुस्तक में निहित सामग्री या पुस्तक में व्यक्त किए गए विचारों के लिए कोई जिम्मेदारी या दायित्व नहीं मानता है।

शीर्षक : बिरसा मुंडा (जनजातीय गौरव)

सम्पादक: प्रो. आलोक कुमार चक्रवाल, प्रो. शैलेन्द्र कुमार

© सम्पादक एवं प्रकाशक

संस्करण : **2022**

ISBN : 978-93-90702-70-1

प्रकाशक :

किताबवाले

22/4735, प्रकाश दीप बिल्डिंग,
अंसारी रोड, दरियागंज,
नई दिल्ली-110 002

मुद्रक :

इन-हाउस (सैल्फ)
नई दिल्ली-110 002

अनुक्रमणिका

संदेश — सुश्री अनुसुईया उइके (माननीया राज्यपाल, छ.ग.) — *(iii)*

संदेश — धर्मेन्द्र प्रधान (माननीय मंत्री, भारत सरकार) — *(v)*

संपादक की कलम से — *(vii)*

1. **Birsa : Making of The Dharti Aba** — 1
   Sanjay Kumar Sinha
2. **Bhagwan Birsa Munda: A Tribal Hero of Indian Adivasis** — 10
   Kunal Kashyap, Priyanka, Subal Das
3. **The Ulgulan for Jal, Jangal and Jamin** — 14
   Vipin Tirkey
4. **Birsa Munda and his Political Vision** — 18
   Sudarshan Singh
5. **The Legend of The Ulgulan** — 24
   Payal Singh
6. **Fir Se Kareu Ulgulan Re: An Analysis of Nagpuri Song Dedicated to Bhagwan Birsa Munda** — 33
   Sirista Julita Meenz, Balram Oraon
7. **जनजातीय चेतना के महानायक बिरसा मुंडा** — 37
   प्रवीन कुमार मिश्रा
8. **बिरसा मुंडा और उनका आंदोलन : इतिहास लेखन, प्रकृति और प्रसांगिकता** — 44
   रितेश्वर नाथ तिवारी
9. **आदिवासियों के भगवान बिरसा मुंडा : एक अध्ययन** — 52
   शशिकांत पाण्डेय
10. **समकालीन संदर्भ में बिरसा मुंडा के चिन्तन की उपादेयता** — 61
    प्रमोद कुमार, संजय यादव

11. **भारतीय प्रतिरोध का जननायक : अमर शहीद बिरसा मुण्डा** 70
अतुल कुमार मिश्र, सीमा पाण्डेय

12. **आदिवासियों के जननायक बिरसा मुंडा तथा उनका धर्म** 78
अनिल कुमार ठाकुर

13. **''बिरसाइत'' धर्म के जीवन संस्कार संबंधित प्रथाएँ: एक मानवैसानिक अध्ययन** 86
शीला पुरती, अबु हुरैरा अंसारी

14. **बिरसा मुंडा एवं राष्ट्रवाद** 90
प्यारेलाल आदिले, मनहरण अनन्त

15. **बिरसा मुण्डा का धार्मिक चिंतन और बिरसा धर्म** 96
घनश्याम दुबे, गुलजार सिंह ठाकुर

16. **समकालीन भारत में बिरसा मुण्डा और उनके जीवन दर्शन की प्रासंगिकता** 101
बिजय प्रकाश शर्मा

17. **औपनिवेशिक भारत में बिरसा मुंडा का संघर्ष** 109
आशीष कुमार सिंह

18. **मुंडा जनजाति में स्वजगारण का द्योतक उलगुलान का स्वरूप** 115
अभिषेक कुमार तिवारी, घनश्याम दुबे

19. **जनजातियों में स्वचेतना का जागरण : बिरसा मुंडा** 122
सीमा पाण्डेय, गोविंद सिंह ठाकुर

20. **बिरसा मुंडा : सामाजिक-धार्मिक आन्दोलन के क्रांतिदूत** 127
घनश्याम दुबे, सचिन कुमार

21. **औपनिवेशिक भारत में बिरसा मुंडा का संघर्ष** 136
आचार्य प्रदीप शुक्ला, अमर नारायण

22. **बिरसा मुंडा: दीकु, संघर्ष तथा स्वर्ण युग की संकल्पना** 142
प्रदीप शुक्ला, परिवेश कुमार बर्मन

23. **आदिवासियों के उत्थान का मसीहा बिरसा मुंडा** 153
सीमा पाण्डेय, सुभाष कुमार

24. **भारत के प्रतिरोध का इतिहास एवं बिरसा मुंडा** 158
गणेश कोशले

22

बिरसा मुंडा: दीकु, संघर्ष तथा स्वर्ण युग की संकल्पना

प्रदीप शुक्ला*, परिवेश कुमार बर्मन**

आदिवासी सरदारों ने सरदारी लड़ाई के रूप में अपने भाई-बंधुओं के लिए जो संघर्ष किया उससे आदिवासियों को कोई लाभ नहीं मिला। पूरे छोटानागपुर में असंतोष व्याप्त रहा। आदिवासी समझ गये कि उनमें कुशल नेतृत्व का अभाव था। ऐसी ही स्थिति में बिरसा मुंडा का प्रादुर्भाव हुआ जो आगे चलकर जनजातीय आकांक्षाओं का मूर्त रूप सिद्ध हुआ। जनजातियों में मुंडा ही सर्वाधिक शोषित थे। न उन्हें किसी प्रकार की स्वतंत्रता थी और न उनके कोई अधिकार थे। वे अपने देवी-देवताओं में भी विश्वास खोते जा रहे थे क्योंकि ये शोषकों से उनकी रक्षा करने में असमर्थ थे। किन्तु बिरसा ने इन्हें एक नया धर्म, नवीन जीवन-दर्शन, नवीन आचार-संहिता और जो कुछ उन्होंने खो दिया था उसे फिर से प्राप्त करने का एक कार्यक्रम दिया। सबसे बड़ी बात कि आदिवासियों को लगा कि बिरसा के माध्यम से वे अंग्रेजों को छोटानागपुर से निकाल बाहर कर सकते थे।

"मसीहा और राजनीतिज्ञ बिरसा परिस्थितियों की देन था। उसका जन्म-दिन सरकारी तौर पर हर साल 15 नवम्बर को मनाया जाता है। किन्तु वस्तुतः उसका जन्म के 1874 या 1875 ई० को जुलाई में बृहस्पतिवार के दिन गड़ेरिया उलिहातू में हुआ था। यह गाँव उन दिनों थाना तमाड़ के अंतर्गत था। वह एक गरीब किसान सुगना मुंडा के चौथे संतान थे। उनकी माता कदमी अयुबहातू के डीवर मुंडा की सबसे बड़ी कन्या थी। सुगना ने पांच वर्ष की आयु में ही बिरसा को उसके ननिहाल अयुबहातू भेज दिया। वहीं उसका पालन-पोषण होने लगा। अयुबहातू से उसकी छोटी मौसी जोनी उसे अपनी ससुराल खटांगा ले गई जहाँ वह एक ईसाई धर्म-प्रचारक के सम्पर्क में आया। उस धर्म-प्रचारक ने उसे पढ़ना-लिखना सिखलाया। पढ़ाई-लिखाई में वह ऐसा लीन हो जाता था कि आस-पास की भी उसे सुध नहीं रहती थी। अपनी इस आदत के

* *प्राध्यापक*, इतिहास विभाग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय बिलासपुर (छ.ग.)
** *शोधार्थी*, इतिहास विभाग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय बिलासपुर (छ.ग.)